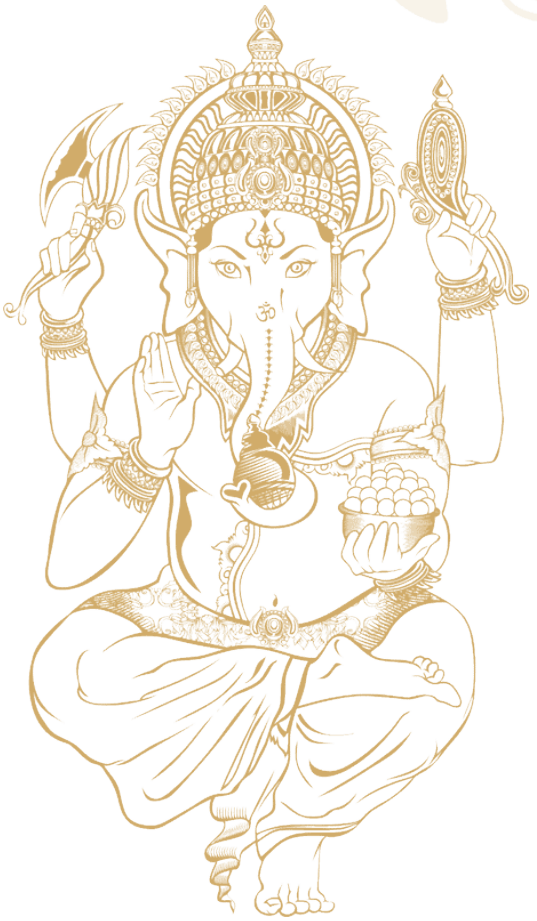

Prince

Jigyasa

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121374906

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/02/1992	जन्म तिथि	23/01/1995
सोमवार	दिन	सोमवार
घंटे 18:45:00	जन्म समय	09:00:00 घंटे
घटी 29:31:24	जन्म समय(घटी)	04:14:08 घटी
India	देश	India
Jind	स्थान	Kanpur
29:19:00 उत्तर	अक्षांश	26:27:00 उत्तर
76:22:00 पूर्व	रेखांश	80:19:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:24:32	स्थानिक संस्कार	-00:08:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:56:26	सूर्योदय	06:57:21
18:19:43	सूर्यास्त	17:43:48
23:45:09	चित्रपक्षीय अयनांश	23:47:29

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 1वर्ष 0मा 11दि		17:42:45	सिंह	लग्न	कुंभ	15:21:55	मंगल 5वर्ष 11मा 26दि	
बुध		11:25:53	कुंभ	सूर्य	मक	08:51:27	गुरु	
07/03/2012		02:28:28	वृश्चि	चंद्र	कन्या	25:15:22	19/01/2019	
07/03/2029		11:07:13	मक	मंगल व	सिंह	06:10:04	19/01/2035	
बुध	03/08/2014	21:36:06	कुंभ	बुध	मक	26:42:23	गुरु	09/03/2021
केतु	31/07/2015	16:30:50	सिंह व	गुरु	वृश्चि	15:05:11	शनि	20/09/2023
शुक्र	31/05/2018	13:28:21	मक	शुक्र	वृश्चि	22:16:15	बुध	26/12/2025
सूर्य	07/04/2019	18:30:02	मक	शनि	कुंभ	16:18:28	केतु	02/12/2026
चन्द्र	05/09/2020	14:19:48	धनु व	राहु व	तुला	17:01:35	शुक्र	02/08/2029
मंगल	02/09/2021	14:19:48	मिथु व	केतु व	मेष	17:01:35	सूर्य	21/05/2030
राहु	22/03/2024	22:55:18	धनु	हर्ष	मक	02:58:51	चन्द्र	20/09/2031
गुरु	28/06/2026	24:22:28	धनु	नेप	धनु	29:36:46	मंगल	26/08/2032
शनि	07/03/2029	29:12:15	तुला	प्लूटो	वृश्चि	06:20:51	राहु	19/01/2035

लग्न-चलित

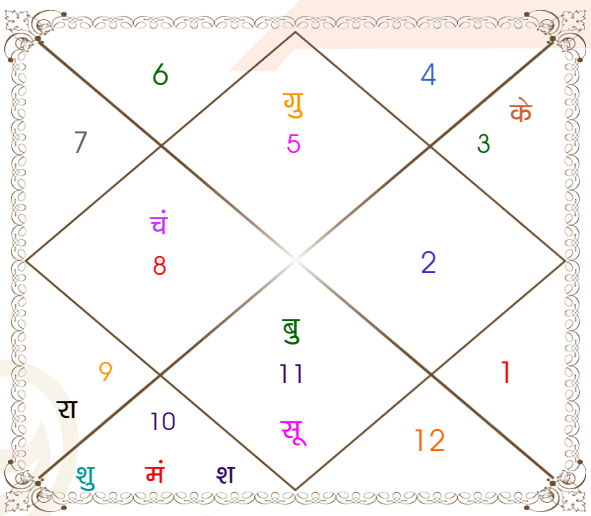

लग्न-चलित

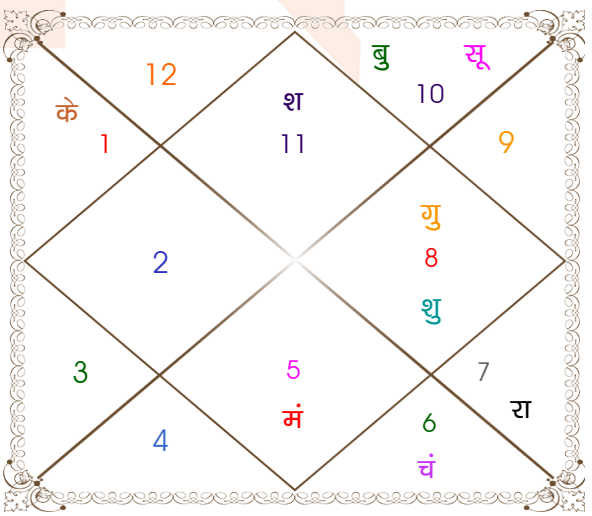

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	विप्र	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	कीटक	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	विपत	मित्र	3	1.50	--	भाग्य
योनि	व्याघ्र	व्याघ्र	4	4.00	--	यौन विचार
मैत्री	मंगल	बुध	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	राक्षस	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृश्चिक	कन्या	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	29.00		

च्तपदबम का वर्ग सर्प है तथा Jigyasa का वर्ग मूषक है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार च्तपदबम और Jigyasa का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

च्तपदबम मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है।

Jigyasa मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि च्तपदबम कि कुण्डली में षष्ठ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

च्तपदबम तथा Jigyasa में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।